श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ९

फरवरी - २०२०

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. संपत्ति और..... का अभिमान हुआ और स्वर्ण की लंका का स्वामी नरकगति में चला गया ।
२. तुम यहाँ लोगों को .....शांति, तुष्टि, पुष्टि और क्षेम करो ।
३. ..... के प्रभाव से धर्मघोषसूरि ने हरिया के शरीर में से विष दूर किया ।
४. तीन..... के जीव पृथ्वीकाय आदि दस पद में जाते है ।
५. जो..... ध्यान है वह तो केवल व्यवहार मात्र है ।
६. ..... नाश के साथ ऐश्वर्य का नाश निश्चित हैं ।
७. गर्भज तिर्यंच जीव सब..... मे उत्पन्न होते हैं ।
८. धर्मघोषसूरि के शिष्य जयप्रभसूरि भी अेक..... आचार्य हो गये हैं ।
९. अन्य गच्छों की समाचारी के साथ तुलना करने में लेखक ने कहीं पर भी अर्थहीन .....का आश्रय नहीं लिया है ।
१०. निश्चय नय से जो विचार करते हैं वह तो अपने.....द्वारा आत्मा का ही ध्यान करते हैं ।
११. वाह रे मद वाह ! तूने तीर्थंकर बनने वाली..... की भी भान भुला दी ।
१२. ..... का प्रारंभ कर चौदहवे अयोगी गुणस्थान में जाने की तैयारी करते है ।
१३. अयोगी गुणस्थान का सूक्ष्म काययोग है, फिरभी ..... कहलाता है ।
१४. .....और उडदियापाक खाकर बल प्राप्त करने भटकता है ।
१५. वहां का अग्रणी..... तो आचार्य का परम भक्त बन गया ।
१६. सोमप्रभसूरि ने धर्मघोष सूरि को गुरुपद पर स्थापित किया तब..... के श्रावक भी अंचलगच्छीय हुए ।
१७. राजस्थान ने ..... वीरपुरुषों और त्यागीओं की अमुल्य भेट दी है ।
१८. भीम नाम के राजपूत ने सूरिजी के उपदेश से डोड गांव में ..... भगवान का मंदिर बनवाया ।
१९. ज्ञान की प्राप्ति यह तो साधन है, साध्य तो एकमात्र..... का क्षयोपशम ।
२०. पृथ्वीकायादि पाँच द्वीइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय के तीन तथा नरक इन .....दंडक में एक ही नपुंसक वेद होता है । १५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. करवत रखवाने के महत्व के केन्द्र के रुप में किस स्थान को देशभर में प्रसिद्धी प्राप्त थी ?
२. मुक्ति महल के प्रवेशद्वार समान कौनसा ध्यान है ?
३. वीरप्रभु ने मरिचि के भव में कौनसा मद किया था ?
४. चार प्रकार के देवताओं में कौनसे वेद होते हैं ?
५. वि.सं. १२३४ में किस गांव में जयसिंहसूरि ने धर्मघोष मुनि को आचार्य पद पर विभुषित किया ?
६. सयोगी केवली गुणस्थानक के अंतसमय में शरीर की अवगाहना कितनी घट जाती है ?
७. जाति मद करके चांडाल कुल में कौन जन्मे ?
८. अंचलगच्छाधिपतिओ ने किस तीर्थ के विकास में अपनी अहम भूमिका निभायी है ?
९. किसके आग्रह से धर्मघोष सूरि ने चित्तोड में पदार्पण किया ?
१०. धर्मघोषसूरि ने किसे योगोव्दहन कराया ?
११. किसे राजमहल से निकलते परमात्मा भक्ति के भाव थे ?
१२. मुक्ति नगर में प्रवेश के लिये बहोत्तर प्रकृतियाँ किसके समान है ?
१३. किसका अभाव हो तो ध्यान किस तरह संभवित है ?
१४. शांतिस्तव में कितने प्रकार के भय कहे गये है ?
१५. किसका उदय अपने सामान्य स्वप्न को भी साकार होने नहीं देता ? १०

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) वेय २) निरते ३) षट्क संस्थान ४) रण ५) व्दिसप्ततिम् ६) भव्यानां ७) स्वस्ती ८) धृति ९) अन्त्ये १०) मारी ११) जीया १२) विगलाई १३) रति १४) गमणा गमणे १५) अनल १६) प्रदानाय १७) अेगो १८) शिव १९) जगति २०) त्वं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) शतपदी	१) संपति	६) श्रीचंद	६) ४२ प्रकृतिका उदय
२) नपुंसक वेद	२) सगोत्री	७) वस्तुपाल-तेजपाल	७) अजिता
३) सयोगी गुणस्थान	३) संघ नरेन्द्र	८) वर्धमानक	८) नारकी
४) दिगंबर मुनि	४) धर्म घोषसूरि	९) गर्भज मनुष्य	९) श्रीवत्स
५) लक्ष्मी	५) नारक	१०) विजया	१०) राजलदे

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. धर्मघोष सूरि नवकार वाली फेरने पद्मासन में कितनी कामलीओं पर बिराजे ?
२. लोलाडा के राउत फणझर को जयसिंहसूरि ने किस साल में प्रतिबोधित किया ?
३. शुक्लध्यान का कौनसा ध्यान स्वरुप, शैलेशीकरण के समय होता है ?
४. मद कितने प्रकार के हैं ?
५. शांति स्तव में कितने उपद्रवों से रहित करने की प्रार्थना की गई है ?
६. अयोगी केवली गुणस्थानक के अंत समय में केवली भगवान कितनी प्रकृतिओं का नाश करते हैं ?
७. जयसिंहसूरि ने एक साथ कितने शिष्यों को आचार्यपद पर प्रस्थापित किया ?
८. जेता शाह ने धुमली गांव में कितना द्रव्य खर्च कर कुआ बंधवाया था ?
९. आर्यरक्षितसूरि के समय में कितने साधु साध्वी थे ?
१०. अयोगी गुणस्थान के उपान्त्य समय में समकाल में केवली भगवान कितनी कर्म प्रकृतियां खपाते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. श्रमण संघ को सदा निरुपद्रवी वातावरण, तुष्टि और पुष्टि देने वाली हे देवी ! तुम जय पाओ ।
२. करवतों को गंगा नदी में डाल देने के पश्चात भी करवत रखवाने की प्रथा संपूर्ण नाबूद नहीं हुई ।
३. गर्भज मनुष्य तेउकाय और वायुकाय में उत्पन्न होते हैं ।
४. आर्यरक्षितसूरि व जयसिंह सूरि की छत्रछाया में पलने का विरल सौभाग्य सोमप्रभमुनि को प्राप्त हुआ ।
५. सूक्ष्म काययोग का आश्रय करने पर भी ध्यान हो इसमें कोई विरोध नही है ।
६. मद करने से भवांतर में दुर्लभ बन जाती है ।
७. सयोगी गु. के अंतिम समय में औदारिकद्विक आदि बीस प्रकृतियों के उदय में विच्छेद होता है ।
८. धर्मघोष सूरि की सौ ग्रंथो से अधिक ग्रंथो के रचयिता तरीके कीर्ति फैली हैं ।
९. धर्म आराधना करते वक्त भी आ जाते मद से अनेक आत्माये मार्ग भूली हैं ।
१०. कोणिक तथा सुभुम सत्ता मद में आये ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. "मुझे छट्ठी नरकी ही क्यों ? सातवी नहीं " ।
२. बाकी कर्मो का क्षय होते ही एक समय में आत्मा सिद्धशीला पर पहुंच जाती हैं ।
३. नवपरिणित हरिया को रात्री में जहरीले सर्प के डंस लेने से उसकी मृत्यु हो गई ।
४. धर्मघोष नाम धारक अनेक आचार्य हो गये है ।
५. इच्छा हो, प्रयत्न हो फिर भी निष्फलता मिलती है ।
६. हे भगवती, तुम्हारी शक्ति परापर रहस्य द्वारा जगत में जय पाती है ।
७. "वि.सं. १२३६ महिमदावादी पार्श्व प्रतिष्ठा धर्मघोष सूरीणा" ।
८. देह के अभाव में ध्यान का भी अभाव होना चाहिये क्योंकि देह बिना ध्यान नहीं हो सकता ।
९. गली गली में नरज आते ब्यूटी पार्लर यही बात बताते है कि हमारा रुप चाहिये वैसा नहीं है ।
१०. करवत रखवाने के विचार ने ऐसा दीवानापन लगाया कि लोगों की संख्या प्रतिदिन बढती ही जाती थी । १५

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१. शांति स्तव में आये भय व उपद्रव समझाओ । २) वेद द्वार समझाओ । ३) करवत प्रथा समझाओ ।
४. लाभमद समझाओ । ५) शैलेशीकरण समझाओ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com